भाकृअनुप- भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आईपीएस के मध्य पूर्व जोनल चैप्टर का आयोजन

लखनऊ। इंडियन फा इ टो पै थो लॉ जि क ल सोसाइटी, नई दिल्ली के मध्य पूर्व जोनल चैप्टर का आयोजन भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में 31 जनवरी 2024 को डॉ. आर. विश्वनाथन, निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर डॉ. दिनेश सिंह, पीसी (गन्ना) जोनल अध्यक्ष, डॉ. संजय गोस्वामी, वैज्ञानिक एवं जोनल काउन्सलर भी उपस्थित थे। मध्य पूर्व जोनल चैप्टर के अंतर्गत एम.जे. नरसिम्हन (एमजेएन) मेरिट एकेडमिक अवार्ड और एपीएस-आईपीएस ट्रैवल ग्रांट हेतु प्रतियोगियों का चयन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 4 छात्र शामिल हुए, जिनमें से तीन ने एमजेएन प्रतियोगिता में और एक ने एपीएस-आईपीएस ट्रैवल अनुदान में भाग लिया। इनमें से दो छात्र अजिता सिंह और वीरेश डी.ए. को राष्ट्रीय स्तर की एमजेएन प्रतियोगिता के लिए अनुशंसित किया गया, जबकि मानसी मिश्रा को एपीएस-आईपीएस ट्रैवल ग्रांट के लिए अनुशंसित किया गया।

एक नजर में

तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आज से

लखनऊ : फसलों में रोग प्रतिरोधक क्षमता कैसे बढ़ाया जाए और रोग से नष्ट होने वाली 20 से 40 प्रतिशत फसल को बचाया जाए, इसको लेकर राष्ट्रीय सम्मेलन गुरुवार को से शुरू होगा। तीन फरवरी तक रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में होने वाले सम्मेलन में 500 से अधिक वैज्ञानिक व शोधार्थी हिस्सा लेंगे। संस्थान के निदेशक और फसल रोग विशेषज्ञ डा .आर विश्वनाथन ने 'खाद्य सुरक्षा के लिए पौधों का स्वास्थ्य : खतरे और वादे' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन नई दिल्ली के इंडियन फाइटोपैथोलाजिकल सोसाइटी के सहयोग से आयोजित

गन्ना संस्थान : प्रतियोगियों का किया चयन

लखनऊ। इंडियन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी के मध्य पूर्व जोनल चैप्टर का आयोजन बुधवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में हुआ। यहां एमजे नरसिम्हन मेरिट एकेडमिक अवॉर्ड और एपीएस-आईपीएस ट्रैवल ग्रांट के लिए प्रतियोगियों का चयन किया गया। इसमें चार छात्र शामिल हुए जिनमें से अजिता सिंह और वीरेश डीए को राष्ट्रीय स्तर की एमजेएन प्रतियोगिता के लिए अनुशंसित किया गया। वहीं मानसी मिश्रा को एपीएस-आईपीएस ट्रैवल ग्रांट के लिए अनुशंसित किया गया। अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. आर. विश्वनाथन ने की। जोनल अध्यक्ष डॉ. दिनेश सिंह, जोनल काउंसलर डॉ. संजय गोस्वामी मौजूद रहे। (संवाद)

150 शोधकर्ताओं ने प्रस्तुत किए शोधपत्र

उपज बढ़ा कर खाद्य सुरक्षा और किसानों को लाभ पहुंचाने पर की गयी चर्चा

लखनऊ (एसएनबी)। रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में इंडियन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी नई दिल्ली के सहयोग से मध्य 'खाद्य सुरक्षा के लिए पादप स्वास्थ्य खतरे और वादे' विषय पर होने वाले चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के तीसरे दिन देश के कोने कोने से आए छह सौ से अधिक वैज्ञानिकों व शोधकर्ताओं में तमाम वैज्ञानिकों व शोधकर्ताओं ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची के कुलपति डॉ. एससी दूबे ने मुंडकर मेमोरियल अवार्ड पर व्याख्यान दिया। रोगज़नक़ राइज़ोक्टोनिया सोलानी और दलहनी फसलों पर इसके प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. वी सेलिया चालम ने डीपी मिश्रा व आरएन पांडे ने आईपीएस की सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक पुरस्कार पर व्याख्यान दिया। इस मौके पर आईआईएसआर लखनऊ के विभागाध्यक्ष (फसल सुरक्षा) डॉ. दिनेश सिंह ने क्रूसीफेरी फसलों में ब्लैक रॉट बीमारी के रोगजनक की विस्तृत जानकारी साझा की। सम्मेलन के तीसरे दिन पांच सौ से अधिक वैज्ञानिकों की मौजूदगी में चार समवर्ती वैज्ञानिक सत्रों में 150 से अधिक मौखिक व पोस्टर शोध पत्रों की प्रस्तुति के साथ ही फसल सुरक्षा से संबन्धित विषयों पर गहन चर्चा की गयी।

गन्ना अनुसंधान संस्थान में "खाद्य सुरक्षा के लिए पादप स्वास्थ्यः खतरे और वादे" विषयक पर कार्यक्रम का दूसरा दिन

लखनऊ, भाकृअनुप। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में इंडियन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी नई दिल्ली के सहयोग से त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन ₹खाद्य सुरक्षा के लिए पादप स्वास्थ्यः खतरे और वादे₹ के दूसरे दिन अनेक गणमान्य वैज्ञानिकों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। दिवस का आरंभ पुरस्कार व्याख्यानों की प्रस्तुति से हुआ। इसके अंतर्गत डा० एससी दुबे कुलपति, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची ने ₹मुंडकर मेमोरियल अवार्ड व्याख्यान दिया। उन्होंने रोगजनक राइजोक्टोनिया सोलानी और दलहनी फसलों पर इसके प्रभाव के बारे में बात की। डा० वी सेलिया चालम ने ₹डीपी मित्रा और आरएन पांडे आईपीएस सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक पुरस्कार व्याख्यान दिया और ट्रांसबाउंड्री विषाणुओं के बिरुद्ध जैव सुरक्षा, निदान, संगरोध नियमों और क्षमता विकास के बारे में जानकारी दी। डा० दिनेश सिंह, विभागाध्यक्ष फसल सुरक्षा, आईआईएसआर, लखनऊ ने "प्रोफेसर एमएस पावगी पुरस्कार व्याख्यान" दिया। उन्होंने फूसीफेरी फसलों में ब्लैक रॉट बीमारी के रोगजनक के बारे में जानकारी दी।

'रोग दिखे तो प्रभावित पौधे को हटा दें'

रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन डा .बीएल जलाली को सम्मानित करते डा . दिनेश सिंह साथ में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो . एससी दुबे व अन्य • जागरण

जागरण संवाददाता, लखनऊ : इंडियन फाइटो पैथोलाजिकल सोसाइटी के सहयोग से रायबरेली रोड के भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में चल रहे तीन दिवसीय 'खाद्य सुरक्षा के लिए पादप स्वास्थ्यः खतरे और वादे' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन शुक्रवार को वैज्ञानिकों द्वारा शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया गया। मुख्य वक्ता और सोसाइटी के अध्यक्ष बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एससी दुबे ने मुंडकर मेमोरियल अवार्ड पर विस्तार से प्रकाश डाला। रोगजनक राइजोक्टोनिया सोलानी और दलहनी फसलों पर इसके प्रभाव के बारे में जानकारी दी।

कुलपति ने कहा कि रोग के लक्षण दिखें तो किसानों को उस प्रभावित पौधे को खेत से बाहर करके जमीन में दफना देना चाहिए। राइजोक्टोनिया घायल पौधों पर अधिक प्रभाव डालता है। पानी और उर्वरक की अधिकता या कमी से रोग पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। वैज्ञानिक डा.वी सेलिया चालम, डीपी मिश्रा और आरएन पांडेय ने सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक पुरस्कार के बारे में जानकारी दी। विशेषज्ञों ने विषाणुओं के विरुद्ध जैव सुरक्षा, निदान, संगरोध नियमों और क्षमता विकास के बारे में चर्चा की। संस्थान के फसल सुरक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डा. दिनेश सिंह ने प्रोफेसर एमएस पावगी पुरस्कार व्याख्यान दिया। डा. एलएम सुरेश ने डा. जेएफ दस्तूर मेमोरियल पुरस्कार के बारे में शोधार्थियों को जानकारी दी। सम्मेलन के दौरान 150 से अधिक मौखिक एवं पोस्टर शोध पत्रों की प्रस्तुति की गई।